

(ब) क्या सरकार दिल्ली में एल.पी.जी.सिलेप्डरों की मांग और पूर्ति को ध्यान में रखते हुए एल.पी.जी.सिलेप्डरों की वर्तमान वितरण प्रणाली और सुधार करने का विचार कर रही है;

(द) यदि नहीं, तो उसके क्या कारण हैं?

पैट्रोलिनम और रसायन मंडी तथा संसर्वीय कार्य मंडो (भी सत्य प्रकाश मालविका) : (क) से (ग) सूचना एकत्र की जा रही है और सभा पटल पर रख दी जाएगी।

(घ) जी, हाँ।

(इ) प्रश्न नहीं उठता।

कोयला धुलाई कारखानों में विद्युत का अभाव

635. श्री रणजीत सिंह : क्या ऊर्जा मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि कोयला धुलाई कारखानों में विद्युत के अभाव के कारण उनके उत्पादन पर विपरीत प्रभाव पड़ा है;

(ख) यदि हाँ, तो 1990-91 के वित्तीय वर्ष में जनवरी, 1991 के अंत तक इन धुलाई कारखानों के उत्पादन आंकड़े क्या थे;

(ग) क्या पिछले वर्ष की उसी अवधि की तुलना में उत्पादन कम हुआ है; और

(घ) इन धुलाई कारखानों को मासिक विद्युत जहरत कितनी है तथा अलू वित्तीय वर्ष के दौरान अनवरा, 1991 के अंत तक मासिक विद्युतपूर्तव्यता का व्यौरा क्या है?

ऊर्जा मंडो (भी कल्याण सिंह कालदी) :

(क) जी, हाँ। विद्युत की कमी का वासरियों के कार्य निष्पत्ति पर, विशेषकर भारत कोकिं कोल लिंग की वासरियों पर, प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है।

(ख) और (ग) वासरियों द्वारा अप्रैल-जनवरी, 1990-91 तक अप्रैल-जनवरी, 1989-90 की अवधि में हुआ उत्पादन और इस संबंध में उत्पादन में आप अन्तराल को विवरण के रूप में नीचे दिया गया है:—

विवरण

(अन्तर्के हुआर एन. में)

अप्रैल-जनवरी

अप्रैल-जनवरी 1990-90

(अनंतिक)

अप्रैल

नाम	1990-91	1989-90		
दुर्दा-I	459	443	(+)	16
दुर्दा-II	473	459	(+)	14
भाजूडीह	844	832	(+)	12
पाथरडीह	336	434	(-)	98
लोडना	136	138	(-)	2
सुदामडीह	351	431	(-)	80
बरोटा	36	63	(-)	27
मुनीडीह	288	367	(-)	79
मजूदा	38	44	(-)	6
जोड़ भांकोली	2961	3241	(-)	250

	1	2	3	4
कारगंडी	971	901	(+) 70	
कथारा	494	593	(-) 99	
सर्वांग	515	572	(-) 57	
बिडी	616	577	(+) 39	
*राजरप्पा	191	538	(+) 253	
कुल केंद्रोंलि०	3387	3181	(+) 206	
नंदन (केंद्रोंलि०)	300	255	(+) 45	
कुल को०इ०लि०	6648	6647	(+) 1	

*वर्ष 1989-90 के दौरान निरीक्षणाधीन के अंतर्गत खालू किया गया।

(घ) इस संबंध में यथा सभव सूचना एकत्रित की जा रही है और सभा पटल पर रख दी जाएगी।

तकनीकी शिक्षा का विकास और विस्तार

636. श्री राम जेठ मलानी : सरदार जगजीत सिंह आरोड़ा :

क्या सोनम संसाधन विकास मंत्री यह बातों की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या देश में तकनीकी शिक्षा के विकास तथा विस्तार के लिए अधिकल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद् द्वारा विश्व बैंक की सहायता से कोई परियोजना तैयार की गई है;

(ख) अदि हाँ, तो 1990-91 के दौरान इस परियोजना के प्रथम चरण में कुल कितने नये तकनीकी शिक्षा संस्थान स्थापित किये जाने का विचार है;

(ग) क्या ऐसे संस्थानों की स्थापना के लिए स्थानों की पहचान करली गई है;

(घ) यदि हाँ, तो तत्संबंधी व्यौद्या क्षय है; तथा क्या उनके खोले जाने

के लिए शैक्षिक दृष्टि से पिछड़े क्षेत्रों को प्राथमिकता दी जाएगी; और

(ङ) यदि हाँ, तो ऐसे पिछड़े क्षेत्रों की संख्या कितनी है जहाँ 1990-91 के दौरान ये संस्थान खोले जायेंगे?

मानव संसाधन विकास मंत्री (श्री राजमंगल पाण्डेय) : (क) से (ङ) देश में तकनीशयन (पालिटेक्निक) शिक्षा का स्तरोन्नयन करने के लिए विश्व बैंक की सहायता से सरकार द्वारा एक परियोजना आरम्भ की गई है। मुख्य रूप से यह राज्य क्षेत्र की एसी परियोजना है जिसमें अधिकल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद् द्वारा अनुमोदित/मान्यता प्राप्त पालिटेक्निकों को शामिल किया गया है। इस परियोजना के प्रथम (1990-1997) चरण में, अन्य बातों के साथ-साथ, सम्बन्धित राज्य सरकारों द्वारा विकास की उनकी प्राथमिकताओं, स्थानीय आवश्यताओं, विद्यमान सुनिधाओं, जनशक्ति, अपेक्षाओं आदि को ध्यान में रखते हुए उन्हीं के द्वारा अनेक नए पालिटेक्निकों की स्थापना की परिकल्पना की गई है। तथापि, वर्ष 1990-91 के दौरान